International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 02 February- 2022
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

डॉ0 रामकुमार वर्मा जी के नाटकों में राष्ट्रीय चेतना का मूल्यांकन

Aditya Kumar Mishra, Research Scholar, Himalayan Garhwal University, Uttrakhand
Dr. Poonam Devi, Assistant Professor, Department of Hindi, Himalayan Garhwal University, Uttrakhand

सार–

डॉ0 रामकुमार वर्मा हिन्दी के बहुमुखी प्रतिभा के धनी साहित्यकार है। उन्होंने कविता, नाटक, एकांकी, निबन्ध एवं आलोचना आदि अनेक विधाओं में लिखा है, और सभी क्षेत्रों में यश प्राप्त किया। नाटक उनकी प्रिय विधाओं में से एक है। डॉ0 वर्मा ने ऐतिहासिक नाटकों की रचना के माध्यम से इतिहास को सिर्फ दुहराया नहीं वरन् वो इतिहास को उसकी गौरवशाली छवि में अपनी युवा पीढ़ी के सम्मुख प्रस्तुत करना चाहते हैं। डॉ0 वर्मा ने प्राचीन ऐतिहासिक घटनाएँ लेकर, ऐतिहासिक पात्रों में नवजीवन तथा उनमें आवेगमय स्फूर्ति का संचार किया है। प्रसाद अपने नाटकों में साहित्यकार के साथ इतिहास सर्जक भी बन गये हैं, परन्तु डॉ0 वर्मा को इतिहास सर्जक नहीं बनना है। उनका लक्ष्य सीधा–सीधा भारतीय गौरवशाली नाटक साहित्य परम्परा में एक अध्याय जोड़ना है। डॉ0 वर्मा के नाटकों में पूर्ववर्ती व परवर्ती दोनों प्रकार की राष्ट्रीय–चेतना के दर्शन समय–समय पर होते हैं।

प्रस्तावना–

रामकुमार वर्मा जी ने प्रभात फेरी के माध्यम से दे ा की जनता में राश्ट्रीय–चेतना पैदा की। इन्होंने हिन्दी साहित्य के लिए अमूल्य निधि प्रदान की। इनके नाटकों में राश्ट्रीय–चेतना भरपूर मात्रा में मिलती है। जिसको शोधार्थी ने एकजुट करने का प्रयास किया है। यह हिन्दी साहित्य के लिए एक नवीन और अनूठी खोज होगी। साहित्य वह दर्पण है जिससे प्रेरणा पाकर भावी भविश्य को देखा जा सकता है, महसूस किया जा सकता है, उसमें बदलाव लाया जा सकता है। साहित्य को किसी सीमा या क्षेत्र में बाँधना उसके साथ अन्याय करना है।

प्रस्तुत भाोध पेपर में डा0 वर्मा के नाटकों में उद्घटित राश्ट्रीय–चेतना को अधिक से अधिक प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। उनके नाटक देश के नवयुवकों को सदैव राष्ट्रीय उत्थान के लिए प्रेरित करते रहेगे।

'विजय पर्व' नाटक में सुगाम अपने अन्य भाईयों से मिलकर अशोक को राज–सिंहासन से हटाना चाहता है, लेकिन उनके धैर्य आत्म विश्वास व साहस को देखकर स्वयं नममस्तक हो जाता है। अशोक, सुगाम को मानव जीवन की सार्थकता के सम्बन्ध में उपदेश देते हैं। इसका एक उदाहरण प्रस्तुत है–

''अशोक–महान् तो मानव है, सुगाम! यदि कोई व्यक्ति सच्चा मानव बन सके। मानव ही राष्ट्र है और मानव ही युग है। वह अनन्त प्रगति है, उसमें अनन्त शक्ति का स्रोत है, यद्यपि वह नहीं जानता कि इस शक्ति का स्रोत कहाँ है।''

नारी को प्राचीन काल से आज तक भोग–विलास की वस्तु माना जाता रहा है, लेकिन समय के साथ–साथ नारी में चेतना भी जागृत हुई है। नारी ने एक ओर नैतिक व सामाजिक दायित्व का भली–भांति पालन किया, तो दूसरी ओर धार्मिक कार्यों की ओर भी अग्रसर हुई। स्वयंप्रभा के अन्दर धार्मिक चेतना जागृत होती है, और वह सांसारिक मोह–माया को त्यागकर संघ में शामिल हो जाती है। इसका एक उदाहरण प्रस्तुत है–

''स्वयं प्रभा–सम्राट! मेरे जीवन की पवित्रता का एकमात्र उद्देश्य है–भिक्षुणी का जीवन। मुझे आज्ञा दीजिए, सम्राट कि मैं अपने जीवन की सारी पवित्रता भिक्षुणी के जीवन में उतार सकूँ, मैं धन नहीं चाहती, मैं वैभव और सम्पदा के विष से अपने को मुक्त रखना चाहती हूँ।''

अशोक की पत्नी महादेवी सामाजिक–चेतना से ओत–प्रोत स्त्री है। वो इस बात को भली–भांति जानती है कि युद्ध से केवल विनाश होता है और मानवीयता का हनन होता है। इसलिए वह युद्ध की निन्दा करती है। इसको एक उदाहरण से स्पष्ट किया जा सकता है–

''महादेवी–और चारू! मैं भी आर्यपुत्र से लड़ना चाहती हूँ कि वे यह युद्ध बन्द कर दें। मुझे यह

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 02 February- 2022
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

अच्छा नहीं लगता। कितने वीरों का नित्य रक्त बहता है। आज जिन वीरों से देश की उन्नति होती, वही व्यर्थ मर रहे हैं।''

महादेवी के हृदय में कटुता के स्थान पर करूणा है। महादेवी युद्ध के स्थान पर शान्ति व अमन की बात करती है। वह चाहती है कि संग्राम बन्द हो, और चारो ओर शान्ति का वातावरण हो। प्रत्येक व्यक्ति सम्मान व शान्ति से जीवन यापन करें। महादेवी, चारू से कहती है–

''यह युद्ध मुझे नहीं चाहिए। कितने दिनों से इस शिविर में रहते हुए जैसे मेरा सुख सपना बनता जा रहा है। रात्रि में युद्ध की समाप्ति पर उनके दर्शन कर लेती हूँ तो ऐसा ज्ञात होता है जैसे कोई वृद्धा युवती बन गयी हो। आज कहूँगी कि वे कलिंग का युद्ध बन्द कर दें। वीरों को स्वतंत्र साँस लेने देना भी तो दया की क्रूरता पर विजय है। मुझे तो इस विजय पर ही संतोष है।''

राष्ट्रीय–चेतना के विभिन्न पक्ष

राष्ट्रीय–चेतना एक व्यापक शब्द है। राष्ट्रीय–चेतना शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है। राष्ट्रीय+चेतना। राष्ट्रीय–चेतना को जानने से पूर्व राष्ट्रीय व चेतना दोनों शब्दों का ज्ञान होना आवश्यक है। राष्ट्रीय शब्द राष्ट्र से बना है। राष्ट्र अंग्रेजी शब्द Nation का हिन्दी रूपान्तरण है। राष्ट्र शब्द का अंग्रेजी अर्थ है। जन्म या जाति। राष्ट्रीयता वह उदात्त भावना है, जो एक देश के नागरिकों को एक सूत्र में आबद्ध करती है। भले ही वे नस्ल, जाति, धर्म, सम्प्रदाय एवं संस्कृति में एक दूसरे से भिन्न हो। यही उदात्त भावना उनमें स्वातंत्र्य, स्वाभिमान एवं सम्प्रभुता की इच्छा को बल प्रदान करती है। अपने सरलतम रूप में यही देशभक्ति है, और यही अपनी जन्मभूमि से प्रेम है। चेतना का अर्थ है–जानना। क्या जानना? थोड़ा कुछ या टुकड़े–टुकड़े में जानने को चेतना नहीं कहते। यह सम्पूर्ण ज्ञान होता है, इस प्रकार राष्ट्रीय–चेतना से अभिप्राय राष्ट्र में घटित होने वाली घटनाओं के प्रति जागरूक होना। राष्ट्रीय–चेतना के विभिन्न पक्षों के अन्तर्गत उसके सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक व राष्ट्रीय पक्ष आते हैं, अर्थात् समाज में जो भी सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक घटनाएँ घटित होती है। उनका प्रत्यक्ष या परोक्ष सम्बन्ध राष्ट्रीय–चेतना से होता है।

डॉ0 रामकुमार वर्मा हिन्दी साहित्य के यशस्वी नाटककार हैं। वे भारतेन्दु व प्रसाद दोनों के सांस्कृतिक व ऐतिहासिक नाटकों से प्रेरणा ग्रहण करके नाटक की रचना करते हैं। उनके नाटकों में एक ओर देश प्रेम की प्रबल भावना है। तो दूसरी ओर मानवतावाद व गाँधी के अहिंसावादी विचारों का प्रभाव है।

उनके नाटकों में राष्ट्रीय–चेतना के विभिन्न तत्व विराजमान हैं। उनके नाटक राष्ट्रीय–चेतना की सभी मूलभूत विशेषताओं को रेखांकित करने में सफल हुए हैं। राष्ट्रीयता उनके नाटकों का मूल स्वर है। जगह–जगह राष्ट्रीयता का स्वर उनके नाटकों में विद्यमान है। उनके नाटक इतिहास की कथाभूमि पर आधारित होकर वर्तमान की समस्याओं के प्रति चिन्तापुर भी बनाते हैं, और तत्कालीन समाज में होने वाली घटनाओं को पूरी तन्मयता से प्रस्तुत करते हैं।

राष्ट्रीय–चेतना के विभिन्न आयाम

मयूर–पंखी व्यक्तित्व वाले बहुमुखी प्रतिभा के धनी डॉ0 रामकुमार वर्मा हिन्दी साहित्य में एकांकी के जनक माने जाते हैं। इसके साथ ही वे एक महान नाटककार भी हैं। डॉ0 रामकुमार वर्मा ने जिस समय साहित्य के क्षेत्र में पदार्पण किया, उस समय हमारा देश अंग्रेजों का गुलाम था। भारतेन्दु हरिशचन्द्र, जयशंकर प्रसाद, राधाकृष्ण दास, उदयशंकर भट्ट आदि नाटककार अपने–अपने ढंग से, साहित्य के माध्यम से देशभक्ति की भावना का प्रचार कर रहे थे। एक साहित्यकार पर, उस युग की परिस्थितियों का गहरा प्रभाव पड़ता है।

डॉ0 वर्मा जी पर भी उसका गहरा प्रभाव पड़ा। उन्होंने भी देश–प्रेम की भावना से ओत–प्रोत नाटकों की रचना की। उनके नाटकों में ऊषाकालीन मोहक लालिमा है। डॉ0 रामकुमार वर्मा के समय में हमारा देश अंग्रेजों का गुलाम था। अंग्रेज लोग, भारतीय जनता का तरह–तरह से शोषण कर रहे थे। अंग्रेज लोग भारतीय जनता पर निर्मम प्रहार कर रहे थे। डॉ0 रामकुमार वर्मा का मन अंग्रेजों के अत्याचार से खिन्न हो उठा। दूसरी ओर गाँधी जी सत्य व अहिंसा का प्रचार करके भारतीय जनता को जागृत कर रहे थे।

डॉ0 वर्मा के समय राष्ट्रीय आन्दोलन निराशा, संघर्ष और पराधीनता के कोहरे में सिमटा था।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 02 February- 2022
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

डॉ0 रामकुमार वर्मा ने अपने नाटकों के माध्यम से जगत में नवीन चेतना लाने का प्रयास किया। उन्होंने प्रसाद के नाटकों से प्रेरणा लेकर अपने नाटकों में राष्ट्रीयता के स्वर को बुलन्द किया। **'महाराणा प्रताप'** व **'जौहर की ज्योति'** दोनों में देश–प्रेम की भावना यत्र–तत्र बिखरी है। इनमें नारियों के आदर्श को रेखांकित किया गया है।

'भगवान बुद्ध' व **'जय वर्धमान'** में समाज में फैले धार्मिक, पाखण्ड पर तीखा व्यंग्य किया गया है। इसके साथ ही जगत की नश्वरता की ओर संकेत किया है। **'विजय पर्व'** में युद्ध के पश्चात् की भयंकर परिस्थिति या विनाश से अवगत कराया है। **'जय भारत'** में अपनी मातृभूमि के प्रति देशवासियों के प्रेम व बलिदान को दर्शाया गया है। वे फिरंगियों से अपने राष्ट्र को मुक्त कराने के लिए दृढ़ संकल्पित हैं। **'जय बंगला'** में बंगाल विभाजन के समय भीषण नरसंहार का, मानवीयता के हनन को पूरी तन्मयता के साथ प्रदर्शित, अच्छाईयों व बुराईयों को तटस्थता के साथ रेखांकित किया गया है।

स्वदेश प्रेम को व्यक्त करने वाले शब्द भी वक्ता की अन्तर्निहित राष्ट्रीयता को प्रकट करते हैं। उसके प्रमाण में **'शिवाजी'** नाटक में आबा जी की बहिन काशी व उसकी परिचारिका के मध्य वार्तालाप को एक उदाहरण द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है–

''काशी–स्वदेश का व्यक्ति, विदेश में जाकर उदास हो जाता है।''

भारतीय संस्कृति में मान–मर्यादा का सदैव सम्मान होता रहा है। नारी का सम्मान भी, भारतीय संस्कृति की पहचान है। मातृभूमि, माँ व नारी तीनों ही हमारे लिए पूजनीय हैं। जहाँ नारियों का सम्मान होता है, वहाँ देवता निवास करते हैं ऐसा वेदों में वर्णित है। आबाजी युद्ध में गौहरबानू को पकड़ लेते हैं। लेकिन उसकी मान–मर्यादा का पूरा ध्यान रखते हैं। इस सम्बन्ध में एक उदाहरण प्रस्तुत है–

''आबाजी–श्रीमन्त की आज्ञा है कि सेना के साथ न स्त्रियाँ रह सकती है और न दासियाँ। किन्तु गौहरबानू की मर्यादा रक्षण के लिए मुझे इस शिविर में अन्तःपुर का प्रबन्ध भी करना पड़ा।''

भारतीय संस्कृति में पूजा–अर्चना का विशेष महत्व है। जब भी कोई नया कार्य या किसी काम से घर से बाहर प्रस्थान किया जाता है तो घर की नारियाँ अपने पतियों या पुत्रों का मंगल तिलक करती हैं। उन्हें अपने हाथों से शस्त्र देती है, और साथ ही विजयश्री का आशीर्वाद देती है। काशी भी युद्ध में जाने से पूर्व अपने भाई आबाजी का मंगल तिलक करती हुई कहती है–

''काशी–(प्रशंसा के स्वरों में) भाई, यह सब आपकी कार्य कुशलता है। इसीलिए तो आप अपने आक्रमणों में सदैव सफल होते हैं।

आबाजी–वह भवानी की कृपा और तुम्हारी मंगलकामना है, काशी।

काशी–(उल्लास से) महाराष्ट्र की ललनाओं के मंगल तिलक में बड़ा बल है। मेरी आरती निष्फल नहीं जा सकती।''

'जय बंगला' नाटक में समाज में फैले अत्याचार व वैमनस्य को रेखांकित किया है। पाकिस्तानी सैनिक बंगाली जानता को लूटते हैं। उनके घरों में आग लगा देते हैं, ओर नारी जाति के साथ दुर्व्यवहार करते हैं। जिससे मानवीयता कराह उठती है। इस सम्बन्ध में एक उदाहरण इस प्रकार है–

''फातिमा–(घबराकर), हाय अल्लाह! ये कौन है?

बाहर से आवाज–दरवाजा खोल, सुअर के बच्चे।

फातिमा–(काँपती आवाज से) घर–घर में मियाँ नहीं है।

बाहर से आवाज–मियाँ जहन्नुम में गया तू तो है मियाँ की बीवी, कमीनी दरवाजा खोलती है कि नही, दरवाजा खोल।

फातिमा –(दृढ़ता से) मैं दरवाजा नहीं खोलूँगी। बाहर से आवाज–घर में आग लगा दो, अब्दुल्ला।''

स्वतत्रंता से पूर्व सत्य, अहिंसा, त्याग, परोपकार, सहानुभूति की कीमत थी। लेकिन बदलते समाज में वैमनष्य, कटुता, जातिवाद, साम्प्रदायिकता ने अपनी जड़े गहरी कर ली। पाकिस्तानी सैनिक निर्दोष व निरीह बंगाली जनता पर अत्याचार करते हैं। उनका सरेआम कत्ल करते हैं। नैतिकता व मानवीयता जैसे शब्द उनके लिए नहीं बने हैं। वे चारों ओर मौत का ताण्डव नृत्य करके प्रसन्न होते हैं।

निष्कर्ष–

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 02 February- 2022
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

जिस प्रकार मध्यकालीन भारतीय समाज में धार्मिक भावना को तांत्रिकों एवं पाखण्डियों ने कुंठित किया, उसी प्रकार आधुनिक भारत में आजादी के बाद भारतीय समाज को राजनीति के दुष्चक्र ने कुंठित कर दिया है। सच्ची राष्ट्रीयता का धीरे–धीरे ह्रास होने लगा। कदम–कदम पर भ्रष्टाचार, अनाचार, अत्याचार ने राष्ट्रीय बोध को धूमिल करके रख दिया। ऐसे समय में देश के महान साहित्यकारों का ध्यान समाज की गलनशीलता की ओर गया और उन्होंने समाज की छवि सुधारने का प्रयत्न किया। उन्होंने समाज के उत्थान के लिए राष्ट्रहित को महत्ता प्रदान करने की योजना बनाई। डॉ0 रामकुमार वर्मा जी ऐसे नाटककार थे, जिन्होंने अपने नाटकों में राष्ट्रीयता के स्वर को प्रमुखता दी। वे सामाजिक व राष्ट्रीय उत्थान के पक्षधर थे। राष्ट्रीयता वह भाव है जिससे अनुप्राणित हो साहित्य सर्जक अतीत का गौरवगान, वीरों की यशोगाथा और कर्तव्य परायणता के वर्णन के लिए प्रेरित होता है। वर्मा जी के नाटकों में ऐतिहासिकता एवं सांस्कृतिकता की जो धुरी है। उसकी बाहरी परिधि में सर्वत्र राष्ट्रीयता का रंग भरा हुआ है। उनके प्रायः सभी नाटक राष्ट्रीय–चेतना से ओत–प्रोत हैं। उन्होंने अपने नाटकों में भारतीय संस्कृति की महानता एवं देशवासियों की अपनी मातृभूमि के प्रति अगाध श्रद्धा को चित्रित किया है। उनके नाटक भारतीय लोगों में त्याग, बलिदान व राष्ट्र प्रेम की भावना जागृत करने में सफल हुए हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

- प्रसाद के सम्पूर्ण नाटक एवं एकांकी–डॉ0 सत्य प्रकाश मिश्र, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद–1, तृतीय संस्करण–2008
- चन्द्रगुप्त–जयशंकर प्रसाद, जनभारती प्रकाशन, 66/719 दरियाबाद, इलाहाबाद, संस्करण–1998
- स्कन्दगुप्त–जयशंकर प्रसाद, अनीता प्रकाशन, दिल्ली–110006, नवीनतम संस्करण।
- रामकुमार वर्मा नाटक रचनावली (भाग–1) सम्पादक डॉ0 कमल किशोर गोयनका व डॉ0 चन्द्रिका प्रसाद शर्मा, प्रकाशक–किताब घर, दरियागंज, नई दिल्ली–110002, संस्करण–2010
- रामकुमार वर्मा नाटक रचनावली, भाग–2, सम्पादक–डॉ0 कमल किशोर गोयनका व डॉ0 चन्द्रिका प्रसाद शर्मा, प्रकाशक–किताब घर, दरियागंज, नई दिल्ली–110002, संस्करण–2010
- रामकुमार वर्मा नाटक रचनावली, भाग–3, सम्पादक डॉ0 कमल किशोर गोयनका व डॉ0 चन्द्रिका प्रसाद शर्मा, प्रकाशक, किताब घर दरियागंज नई दिल्ली–110002, संस्करण–2010
- नानाफड़नवीस–डॉ0 राम कुमार वर्मा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद–1, संस्करण–2000
- शिवाजी–डॉ0 राम कुमार वर्मा, साहित्य भवन, इलाहाबाद–21103, दशम संस्करण–1987